23. मिथिला-चित्रकला

मिथिला या मधुबनी चित्रकला मिथिलांचल क्षेत्र जैसे-बिहार के दरभंगा, मधुबनी एवं नेपाल के कुछ क्षेत्रों की प्रमुख चित्रकला है। प्रारंभ में रंगोली के रूप में रहने के बाद यह कला धीरे-धीरे आधुनिक रूप में कपड़ों, दीवारों एवं कागज़ पर उतर आई है। मिथिला की औरतों द्वारा शुरू की गई इस घरेलू चित्रकला को पुरुषों ने भी अपना लिया है।

माना जाता है कि इस चित्रकला को राजा जनक ने राम-सीता के विवाह के दौरान महिला कलाकारों से बनवाई थी। आज मिथिलांचल के कई गाँवों की महिलाएँ इस कला में दक्ष हैं। अपने असली रूप में तो ये चित्रकला गाँवों की मिट्टी से लीपी गई झोंपड़ियों में देखने को मिलती थी, लेकिन इसे अब कपड़े या फिर कागज़ पर खूब बनाया जाता है।

इस चित्रकला में ख़ास तौर पर हिन्दू देवी-देवताओं की तस्वीरें, प्राकृतिक नज़ारे जैसे-सूर्य व चंद्रमा, धार्मिक पेड़-पौधे, जैसे-तुलसी और विवाह के दृश्य देखने को मिलेंगे। मधुबनी चित्रकला दो तरह की होती हैं- भित्ति चित्र और अरिपन या अल्पना।

भित्ति चित्र को मिट्टी से पुती दीवारों पर बनाया जाता है। इसे घर की तीन खास जगहों पर ही बनाने की परंपरा है, जैसे-भगवान व विवाहितों के कमरे में और शादी या किसी खास उत्सव पर घर की बाहरी दीवारों पर। मधुबनी चित्रकला में जिन

देवी-देवताओं को दिखाया जाता है, वे हैं-माँ दुर्गा, काली, सीता-राम, राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती, गौरी-गणेश और विष्णु के दस अवतार। इन तस्वीरों के अलावा कई प्राकृतिक और रम्य नज़ारों का भी चित्र बनाया जाता है। जानवरों, चिड़ियाँ, फूल-पत्ती को स्वास्तिक की निशानी के साथ सजाया-सँवारा जाता है।

मधुबनी चित्रकला में चटख रंगों का इस्तेमाल खूब किया जाता है, जैसे-गहरा लाल रंग, हरा, नीला और काला। कुछ हल्के रंगों से भी चित्रकला में निखार लाया जाता है, जैसे-पीला, गुलाबी और नींबू रंग। यह जानकर हैरानी होगी कि इन रंगों को घरेलू चीजों से ही बनाया जाता है, जैसे- हल्दी, केले के पत्ते और दूध। भित्ति चित्रों के अलावा अल्पना का भी बिहार में काफी चलन है। इसे बैठक या फिर दरवाज़े के बाहर बनाया जाता है। पहले इसे इसलिए बनाया जाता था ताकि खेतों में फसल की पैदावार अच्छी हो। लेकिन, आजकल इसे घर में शुभ कामों में बनाया जाता है।

सदियों पुरानी कला के इस रूप को देश-विदेश की मुख्यधारा में लाने का श्रेय अनेक विद्वानों और कलाप्रेमियों को जाता है। भारतीय प्रशासनिक सेवा के ब्रिटिश अधिकारी डब्लू. जी. आर्चर 1930 के दशक में तस्वीरों के माध्यम से मिथिला चित्रकला को पहली बार दुनिया के सामने लाए। पच्चीस सालों से मिथिला चित्रकला का प्रचार-प्रसार कर रही संस्था के अध्यक्ष प्रो॰ डेविड सेण्टन कहते हैं, "मिथिला चित्रकला में अपार सभावनाएँ हैं। जरूरत है प्रतिभाओं को पहचान कर उन्हें अनुकूल सुविधाएँ मुहैया कराए जाने की।"

इस संस्था ने सन् 2003 में मधुबनी में मिथिला कला संस्थान की स्थापना की। यह संस्थान हर साल बीस छात्रों को छात्रवृत्ति देकर मिथिला चित्रकला को प्रोत्साहित करता है।

संस्थान के निदेशक चित्रकार संतोष कुमार दास कहते हैं, "गंगा देवी और सीता देवी की राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि के बाद जिस तरह से इस कला को प्रोत्साहन मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल पाया। शिक्षा और मूलभूत सुविधाओं के अभाव में कलाकार किसी तरह इस पुराने कला के रूप को बचाए हुए हैं। महिलाओं की विशेष उपस्थिति इस चित्रकला की विशेषता रही है। पीढ़ी दर पीढ़ी परंपरा के रूप में इन्होंने इसे बचाए रखा।"

मिथिला चित्रकला में अब प्राकृतिक रंगों के बदले एक्रिलिक रंगों का प्रयोग होने लगा है। इससे चित्रकला के जल्दी बिखरने का खतरा नहीं रहता है। मधुबनी चित्रकला में आज भी मिथिलांचल की मिट्टी की खुशबू अपने आप ही निखरने लगती है।

-पाठ्यपुस्तक विकास समिति

आपकी कलाकारी

अब तक आपने मधुबनी चित्रकला के बारे में बहुत कुछ जान–समझ लिया होगा। आप भी मधुबनी शैली में चित्र बनाइए और रंग भरिए–

रंगों की दुनिया : वरली शैली

आप बिहार की मधुबनी चित्रकला के बारे में जान चुके हैं। इसी प्रकार वरली चित्रकला महाराष्ट्र में बहुत प्रचलित है। नीचे दिए गए चित्र वरली शैली में हैं। आप इसे भी बनाने का अभ्यास कीजिए –

Developed by: www.absol.in